© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

बौद्ध कालीन मल्ल गणराज्य

डॉ0 दानपाल सिंह
0177A काजीपुरखुर्द,
गोरखपुर, उ0प्र0।

महापरिनिव्वान–सुत्त[1] में मल्ल राजाओं को वशिष्ठ गोत्रीय क्षत्रिय कहा गया है दिव्यावदान[2] के अनुसार ये इक्ष्वांकु वंशीय क्षत्रिय थे। बाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण–पुत्र चन्द्रकेतु की उपाधि मल्ल थी।[3] उनका राज्य कारूपथ के पूर्वी भाग में स्थित था जिसकी राजधानी चन्द्रकांता थी।[4] इसलिए यह भू–भाग 'मल्ल'–भूमि' अथवा 'मल्ल–राष्ट्र' कहलाया। इसी उपाधि का अनुकरण कर ये तथा इनके अभिजनों के वंशज 'मल्ल' कहलाए। चन्द्रकेतु के कारूपथ जाने के पूर्व 'मल्ल–भूमि' एवं 'मल्ल–जाति' का उल्लेख अप्राप्य हैं और चन्द्रकेतु की उपाधि स्पष्ट रूप से मल्ल थी। इससे स्पष्ट होता है कि चन्द्रकेतु ही 'मल्ल–राष्ट्र' का वास्तविक संस्थापक था। डा0 राजबली पाण्डेय भी इस मत से सहमत है।[5]

मल्ल–गणराज्य[6] कोशल राज्य के अचिरावती नदी एवं वज्जि गणतंत्र के मध्य, हिमांचल के पाद–प्रदेश में स्थित था। दक्षिण–पूर्व में यह लिच्छवि गणराज्य को कोशल के अभिन्न अंग के रूप में स्पर्श करता था तथा महानदी अथवा सदानीर (बड़ी गण्डक) इनके मध्य सीमा रेखा का सीमा निर्माण करती थी। इसके पश्चिमोत्तर दिशा में कपिलवस्तु के शाक्यों का गणतंत्र था कुछ दक्षिण–पश्चिम की तरफ देवदह एवं रामग्राम के कोलियों की क्रीड़ा स्थली स्थित थी। इसकी दक्षिणी सीमा मोरियों गणतंत्र द्वारा निरूपित होती थी।

बुद्ध युग में मल्ल–गणराज्य स्पष्टतः दो भागों में विभक्त था, जिनकी राजधानियां क्रमशः कुशीनगर एवं पावा थी।[7]

(अ) कुसीनारा के मल्ल–

दीघ निकाय[8] के महापरिनिव्वान सुत्त एवं महासुद्दसन–सुत्त से सूचित होता है कि बौद्ध काल में कुशीनगर एक क्षुद्र नंगला मात्र था परन्तु शांस्ता ने, प्राचीन कुसीनारा की 'श्री' का वर्णन करते हुए कहा है कि 'हे आन्नद'! यह कुशीनारा प्राचीन काल में राजामहासुदर्शन की 'कुशावती' नामक राजधानी थी। यह नगरी समृद्ध, स्फीत, बहुजनाकीर्ण एवं सुभिक्ष थी, जैसे कि देवों की राजधानी आलकमन्दा..... । कुशावती नगरी सदैव हस्ति–शब्द, अश्व–शब्द, खाइये–पीजिए आदि इस शब्दों से गुंजित रहती थी।[9] कुशीनारा में भगवान महापरिनिव्वान को प्राप्त हुए थे।[10] इसीलिए इसे चार बौद्ध तीर्थों में परिगणित किया गया है।[11] दिव्यावदान[12] से सूचित होता है कि मगधराज अशोक, गौतम बुद्ध की परिनिर्वाण स्थली की दर्शन कर मुर्छित हो गए थे।

चीनी पर्यटक फाह्यान[13] के अनुसार कुशीनगर पिप्पलीवन के मोरियों के अंगार–स्तूप से 12 योजन पूर्व तथा वैशाली से 25 योजना पश्चिम में स्थित था। युवान–च्वांग[14] के यात्रा विवरण के

अनुसार यह मोरिय गणराज्य के उत्तर–पूर्व दिशा में स्थित था। कनिंघम ने वर्तमान कुशीनगर के दक्षिण–पश्चिम में स्थित ''अनुरूधवा'' ग्राम को प्राचीन कुसीनारा से समीकृत किया है।[15] आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के उत्खनन के बाद सन् 1876–77 में बुद्ध का महापरिनिव्वाण–मंदिर स्तूप प्रकाश में आया।[16] इस मंदिर के अन्तःप्रकोष्ठ में एक मंच पर गौतम बुद्ध की 20 फुट लम्बी गुप्त कालीन भव्य प्रतिमा शयनासन में मिली। इस मंच की एक पटिया पर पांचवी शताब्दी का एक लेख[17] 'उत्कीर्ण है, जिसमें इस मूर्ति का का निर्माणकर्ता एवं स्वामी मथुरा निवासी हरिवल सिद्ध होता है। कुशीनगर के उत्खनन से प्राप्त कतिपय मुद्राओं पर उत्कीर्ण लेखों[18] से स्पष्ट होता है कि जहाँ इस समय कुशीनगर के समीप परिनिर्वाण–स्तूप एवं चैत्य है, वहीं शालवन उपवन्तन स्थित था। वहीं गौतम बुद्ध महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए थे। इसी स्मृति में उपर्युक्त धार्मिक स्तूपों एवं चैत्यों का निर्माण हुआ था। एक ताम्रपत्र[19] कसया से भी प्राप्त हुआ, जिस पर ''.....परिनिर्वाण चैत्य ताम्र पट्ट'' अंकित है।

उपर्युक्त पुरातात्विक साक्ष्यों से कुशीनगर का भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण स्थली होना पूर्णतः सिद्ध होता है।

मल्ल राष्ट्र के पतनोपरान्त कुशीनगर की राजनैतिक महत्ता समाप्त हो गई तथा मात्र इसकी धार्मिक प्रतिष्ठा शेष रही। इसीलिए बौद्ध भिक्षुओं की संज्ञा से इन स्थानों को सम्बोधित किया जाने लगा।[20] दीघ निकाय की अठ्ठकथा के अनुसार, बुद्ध के परिनिर्वाण के उपरान्त उनके प्रधान शिष्य आनन्द भिक्षुओं के साथ राजगृह को प्रस्थान कर गए। परन्तु मल्लों को सान्त्वना प्रदान करने हेतु उनके दूसरे शिष्य अनिरूद्ध को कई दिनों तक कुशीनगर में रूकना पड़ा। बाद में उन्हीं के नाम पर प्राचीन कुशीनारा का नाम ''अनिरूद्धपुर''[21] पड़ा जिसका तद्भव रूप ''अनरूिधवा'' आज भी प्रचलित है। भिक्षु महाकाश्यप ने पावा से कुशीनगर गमन करते समय जिस स्थान पर दोपहरी में विश्राम किया था, उसे ''महाकाश्यप–पुरी'' कहा गया, जिस तद्भव रूप ''कसया''[22] आज भी प्रचलित है। गौतम बुद्ध के परिनिर्वाणोपरान्त ''मल्लों के मुकुट बन्धन'' संज्ञक चैत्य में भगवान का अन्तिम संस्कार हुआ था।[23] इस चैर्य में मल्ल नरेशों के सिर पर मुकुट बांध कर उनका राज्याभिषेक किया जाता था, इसीलिए इसे ''मुकुट–बन्धन चैत्य'' संज्ञा से अभिहित किया गया है।[24] 'मुकुट–बन्धन चैत्य' को आधुनिक 'रामाभार–ताल' के पश्चिमी पार्श्व में स्थित एक विशाल स्तूप के भग्नावशेष से समीकृत किया गया है।[25]

(ब) पावा के मल्ल–

मल्लों की दूसरी शाखा की राजधानी पावा थी।[26] दीघनिकाय[27] के अनुसार बुद्ध अपनी यात्रा में राजगृह से पावा होते हुए कुशीनगर पहुँचे। 'भोगनगर एवं 'कुसीनारा के मध्य स्थित 'पावा', कुसीनारा से तीन गव्युति अर्थात् पौन योजन दूर स्थित था।[28] भगवान बुद्ध ने पावा निवासी चुन्द लुहार के यहाँ अपना 'अन्तिम पिण्डवात', ''शूकर मुद्दव'' ग्रहण किया था।[29] बौद्ध[30] एवं जैन[31] ग्रंथों के अनुसार महावीर 'जिन' पावा में ही महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए थे। महात्मा बुद्ध[32] के अनुसार ''वे भूमियाँ धन्य एवं दर्शनीय है, जहाँ तथागत अवतरित होता है, उन्हे संबोधि की प्राप्ति होती है, वे जीवन–सत्य की घोषणा करते हैं, उनका अन्तिम पिण्डपात (भोजन) होता है और वे महापरिनिर्वाण को प्राप्त होते हैं।'' इसीलिए ''पावा'' बौद्ध एवं जैन धर्मावलम्बियों द्वारा समान रूप से पवित्र तीर्थ–स्थली मानी जाती है।[33]

'पावा' की पहचान के मतैक्य में सर्वथा अभाव है। कनिंधम ने 'पावा' को पडरौना' से समीकृत किया है।[34] पड़रौना, कसया (प्राचीन कुसीनारा से उत्तर–पूर्व–दिशा में बड़ी गण्डक सदानीरा की तरफ बारह मील की दूरी पर स्थित है) कनिंघम को यहाँ पर 220 फीट लम्बा 120 फीट चौड़ा और 14 फीट ऊँचें टीले अथवा 'धूस' के साथ कुछ विखण्डित बौद्ध मूर्तियाँ उपलब्ध हुई थीं। कनिंधम के इस समीकरण को स्वीकार करने में सबसे बड़ी बाधा इसका राजगृह से कुसीनारा के सीधे मार्ग पर न होना तथा कुसीनगर से छः मील की अपेक्षा बारह मील की दूरी पर अवस्थित होना है।

ए0सी0 कार्यालय[35] ने इसकी पहचान कसया से 10 मील दक्षिण–पूर्व दिशा में स्थित 'सठियांव डीह' (फाजिलनगर) से की है। भारतीय बौद्ध[36] एवं अनेक अध्येता[37] इससे सहमत है। विगत के वर्षों में डा0 शैलनाथ चतुर्वेदी एवं डा0 दयानाथ त्रिपाठी, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, गोरखपुर वि0वि0 के निर्देशन में 'सठियांव' (फाजिलनगर) में उत्खनन हुआ परन्तु ऐसा कोई सुस्पष्ट प्रमाण नहीं मिला, जिससे इसका 'पावा' होना सुनिश्चित हो सके। डॉ0 बी0सी0 लाहा[38] एवं कतिपय विद्वान पावा को प्राचीन कुसीनारा से समीकृत करते है सम्भवतः उनके इस समीकरण का मूल आधार युवान–च्वांग का यात्रा–विवरण है,[39] जो समीचीन नहीं जान पड़ता है, क्योंकि पालि–ग्रंथों[40] से पावा एवं कुसीनारा स्पष्टतः दो स्थल सिद्ध होते है जैन–धर्मावलम्बी इसे वर्तमान पावापुरी (जन0 वैशाली), से समीकृत करते है[41] जो ठीक नहीं है। महापंडित राहुल सांसकृत्यायन, रामकोला के निकटस्थ 'पपउर–ग्राम' को प्राचीन पावापुरी मानते है।[42] इसे सत्य मानने में भी वहीं आपत्तियॉ है, जो पड़रौना को पावा मानने में है।

अतः 'पावा' के सही तादात्म्य हेतु कुसीनगर से राजगृह जाने वाले मार्ग के उभय पार्श्व में कुसीनगर से लगभग छः आठ मील दूरी पर उत्खनन करने के साथ ही कसया से उत्तर–पूर्व दिशा में लगभग 12 मील दूरी पर स्थित 'छावनी' नामक स्थान के मध्य सीधे मार्ग पर पड़ने वाले बालुका निर्मित टीलों तथा छावनी स्थित बालू के ढूह आदि का भी अत्खनन अत्यावश्यक है।

इस प्रकार राजनैतिक दृष्टिकोण से सरयूपार ही नहीं अपितु सम्पूर्ण उत्तर भारत का छोटी–छोटी इकाईयों में बंटा होना परिलक्षित होता है। यद्यपि ये छोटे–छोटे गणतंत्रात्मक राज्य सिर्फ नाममात्र के थे, किन्तु इनमें राजनैतिक ढृढता इतनी व्याप्त थी कि जब अजातशत्रु ने वैशाली पर आक्रमण किया तो उसे वैशली की ओर से युद्धरत् छत्तीस गणराज्यों का सामना एक 'सम्मिलित शाक्ति' के रूप में करना पड़ा।[43] निःसन्देह उपर्युक्त 36 गणराज्यों में सरयूपार के समस्त गणराज्य भी सम्मिलित थे, जिसकी सम्मिलित शक्ति के समक्ष अजातशत्रु को नाकों चने चबाने पडे। गणराज्यों की इसी सफलता के कारण विश्व–विजय के स्पप्न–द्रष्टा सिकन्दा महान को भी उत्तर–भारत में पर्दापण करने पर मृत्यु का आलिंगन करना पड़ा और उसकी पाटलिपुत्र विजय की इच्छा पूरी न हो सकी।[44] सम्भवतः गणराज्यों की राजनैतिक दृढ़ता के जड़ में इन गणराज्यों की भौगोलिक सुस्थिति विद्यमान थी। यह समस्त गणतंत्रात्मक शाक्तियां तीन दिशाओं यथा–दक्षिण, पूर्व एवं पूर्वोत्तर में नदियों से घिरी हुई थी, तो पश्चिमोत्तर एवं पश्चिम में हिमांचल की गगनचुम्बी उपत्यकाओं से सरक्षित थी और बाह्य आक्रमण के समय अपनी समस्त शक्तियों का संचय कर आक्रमणकारी के प्रतिरोध हेतु तत्पर हो उठतीं थी, परन्तु कभी–कभी व्यक्तिगत स्वार्थ एवं महत्वकांक्षाओं के कारण इनमें आपसी संघर्ष के दृश्य भी उपास्थित हो जाते थे, तथा–शस्य–सिंचन में रोहिणी के जल के प्रयोग हेतु शाकय–कोलिय गणराज्यों में उत्पन्न नरसंहार की संभावना। उसकी समाप्ति शास्ता के अथक प्रयास से ही सम्भव हो सका था।

प्रसेनजित, महाली एवं बन्धु मल्ल ने एक ही साथ तक्षशिला में शिक्षा ग्रहण की थी। शिक्षा की समाप्ति के उपरान्त प्रसेनजित कोशलाधीश बना ओर महाली ने लिच्छवि गणतंत्र का शसन तंत्र

संभाला। प्रसेजनति ने मल्ल कुमार बन्धु मल्ल को अपना सेनापति बना लिया। कोशलाधीश ने चाटुकारों द्वारा भड़काये जाने पर बन्धु मल्ल एवे उसके सभी पुत्रों को मरवा डाला। बाद में बन्धु मल्ल की पत्नी मल्ल कुमारी मल्लिका एवं उसकी बधुओं से क्षमा याचना की और बन्धु मल्ल के भांजे दीर्घकारायण का सेनापति पद प्रदान किया। अपने निर्दोषी मामा की हत्या के मूल कारण से अवगत होने पर दीर्घकारायण अतिशय दुःखी रहने लगा एवं उसके मन में बदले की भावना अंकुरित होने लगी।[45]

एक समय शास्तां शाक्यों के 'उलुप्प' नामक नगर में विहार कर रहे थे। उसी समय प्रसेनजित वहीं निगम से थोड़ी दूर पर पड़ाव डालकर, छ व्यंजन, उण्ष्णीश, खड्गक एवं पादुका इन पांच राजसी वस्तुओं को दीर्घकारायण को सौंप कर, अकेला ही गंधकुटी में प्रवेश कर गया। उसके गंधकूटी में प्रवेश करते ही दीर्घकारायण विडूडभ को कोशलाधीश बनाने के लिए प्रसेजित को असहाय छोड़कर श्रावस्ती को प्रस्थान कर गया। शासक बनने के पश्चात विडूडभ कपिलवस्तु पर आक्रमण किया जिसमें अत्यधिक संख्या में शाक्य हताहत हुए। तत्पश्चात् विडूडभ ने अचिरावती तट पर सैन्य पड़ाव डाला। उस समय भयंकर वर्षा के कारण नदी में अचानक बाढ़ आ गई और विडूडभ सेना सहित अचिरावती नदी में चिरनिद्रा में सो गया।[46] इस प्रकार अचिरावती, तत्कालीन राजनीतिक रंचमंच पर एक भयंकर पटाक्षेप का रण बनी। भगवान बुद्ध का प्रतिवर्ष तीन मास का वर्षा–वास भी तत्कालीन सरयूपार में प्रकृति का मानव–जीवन पर अपरोक्ष–प्रभाव प्रदर्शित करता हैं।

संदर्भ सूची

1– दीघ नि0 (बम्बई वि0वि0), भाग–2, पृ0–126

2– गोरखपुर और उसकी क्षत्रिय जाति का इति0, पृ0–75

3– बाल्मीकि रामा0 7/102/9

4– बालमीकि रामा0 7/102/9, रघुवंश 15/90, गो0 और उ0क्ष0 जाति का इति0 पृ0–76
वायुपुराण 88/187–8 ''अंगदस्यांगदीया तुदेशे कारापथे पुरी।
चन्द्रकेतोस्तु मल्लस्य चन्द्रववेत्रापुरीशुभा।।''

5– गो0 और उ0क्ष0 जाति का इति0,पृ0–52–53

6– बुद्धकालीन भारतीय भूगोल पृ0–316, हिस्ट्री ऑफ कोशल, पृ0–285, गो0 और उ0क्ष0 जाति का इति0, पृ0–79

7– दीघ निकाय (बम्बई वि0वि0,), भाग–2, पृ0–130–31

8– दीघ निकाय (बम्बई वि0वि0), भाग'–2, पृ0–116 और 134
''या मन्ते हमस्मिं कुडुनगर के उज्जंगल नगरेक परिनिव्वायि।''

9– दीघ नि0 (हिन्दी अनु0), पृ0–143–144

10– दीघ नि0 महापरिनिव्वान–सुत्त।

11– बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, पृ0–317

12– दिव्या0 पृ0–394

13– गाइल्सः ट्रेवल्स ऑफ फाहयान, पृ0–40–41

14– वाटर्सः ऑन युवान–च्वांग, जि0–2, पृ0–25

15— आर्के0 सर्वे ऑफ इण्डिया—1861—1862, पृ0—77—83, ऐशियंट ज्योग्राफी, पृ0—494
16— आर्के0 सर्वे ऑफ इण्डिया—1910—11, पृ0—62
17— ''देयधर्मोऽयं महाविहारस्वामिनों हरिवलस्य। प्रतिमा चेयं घटिता दिन्नेन माथुरेण''। बुद्धकालीन भारतीय, भूगोल, पृ0—319
18— अ— ''श्री महापरिनिर्वाण बिहारे भिक्षु संघस्य''
ब— ''श्री महापरिनिर्वाण बिहारी आर्य भिक्षु संघस्य''
स— 'कुसनगर'
आर्के0 सर्वे ऑफ इंडिया, वार्षिक रिपोर्ट 1910—11
19— आर्के0 सर्वे ऑफ इण्डिया वार्षिक रिपोटे 1911—12, पृ0—17 और 184
20— गो0 और उ0क्ष0 जाति का इति0, पृ0—77
21— गो0 और उ0क्ष0 जाति का इति0, पृ0—78
22— बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, पृ0—321
23— दीघ नि0 (महापरिनिव्वान—सुत्त)
24— दिव्या0, पृ0—201, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, पृ0—321
25— आर्के0 सर्वे ऑफ इण्डिया, 1861—62, पृ0—77—83
26— दीघ नि0 (बम्बई, वि0वि0), भाग—2,, पृ0—131
27— दीघ नि0 महापरिनिव्वान—सुत्त
28— बुद्धकालीन भारतीय भूगोल
29— दीघ नि0 (बम्बई, वि0वि0), भाग—2,, पृ0—100, एफ0एफ0
30— म0नि0, सामगाम—सुन्तत, 3/1/4
31— ला0 बी0 सी0 ''महावीर'' पृ0—52
32— दीघ नि0 महापरिनिव्वान—सुत्त
33— पावा समीक्षा, पृ0—13, डा0 शैलनाथ चतुर्वेदी
34— आर्के0 सर्वे ऑफ इण्डिया, 1861—62, पृ0—74—76
35— ऐंशियंट ज्योग्राफी, पृ0—498
36— आर्के0 सर्वे ऑफ इण्डिया भाग—18, पृ0—108, भाग—22, पृ0—30 एफ0एफ0
37— संयुक्त निकाय (सारनाथ संस्करण) भाग—1, की भूमिका पृ0—4 कुशीनगर का इतिहास, पृ0—25
38— गोरखपुर और उ0क्ष0 जाति का इतिहास, पृ0—78 इण्डियन कल्चर भाग—14
39— ला0वी0सी0,हि0 ज्यो0 पृ0—116, 97
40— बीलः बुद्धिष्ट रिकार्डस ऑफ दि वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग—2, पृ0—31—32
41— दीघ निकाय, महापरिनिर्वाण—सुत्त।
42— पावा—समीक्षा, पृ0—11, हिस्ट्री ऑफ कोशल, पृ0—281
बुद्धकालीन भारतीय भूगोल—पृ0—324
43— बुद्ध—चर्चा पृ0—487
44— प्राचीन भारत, पृ0—214
45— द्र0—अलेजेण्डर एण्ड दि मालवाज, मगध, पृ0—122—127 प्राचीन भारत पृ0—73—74
46— कुशीनगर का इतिहास, पृ0—73—74